एकता के प्रतीक डॉ0 मुख्तार अहमद अन्सारी

डॉ. कुलदीप पाण्डेय*

ऐतिहासिक तिथिक्रम से ज्ञात होता है कि इस भू–मण्डल पर आवश्यकता के अनुसार समय–समय पर महान नेताओं ने जन्म लिया है। इन्हीं महान नेताओं में डॉ0 मुख्तार अहमद अन्सारी का नाम इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। भारत के इस वीर नायक ने भारत में ही नहीं वरन् विदेशों में भी स्वतंत्रता आन्दोलन का तूफान खड़ा कर दिया। आपने अपने भाषण में कहा था :–

डॉ0 अन्सारी ने अखिल भारतीय मुक्ति संग्राम को अपने क्रमबद्ध कार्यक्रम के द्वारा एक शक्ति प्रदान की जिससे भारतीय जनमानस में एकता, अखण्डता के प्रति एक नई चेतना का विकास हुआ। भारतीय जनता पुनः संगठित होकर कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए उत्तेजित हो उठी। उसकी उत्तेजना ने भारतवर्ष को आजाद कराने का संकल्प लेकर मुक्ति संग्राम की आग में सम्पूर्ण भारत को लपेट लिया।

डॉ0 मुख्तार अहमद अन्सारी का जन्म 25 दिसम्बर 1880 कस्बा यूसुफपुर परगना मुहम्मदाबाद जिला गाजीपुर के एक अन्सारी परिवार में हुआ। इनके पुरखों का सम्बन्ध हजरत अबू अय्यूब अन्सारी तथा रजी अल्लाहो अमहा से मिलता है जो पैगम्बरे–इस्लाम के एक सहाबी थे। इन्हीं की औलादों में एक महात्मा शेखुलस्लाम ख्वाजा अब्दुल्ला अंसारी का नाम आता है जिनका मजार अफगानिस्तान (हेरात) में है। डॉ0 अन्सारी का सम्बन्ध इसी अन्सारी परिवार से है।

डॉ0 अन्सारी ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा अपने गॉव यूसुफपुर से आरम्भ की। परिवार में धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त विक्टोरिया हाईस्कूल गाजीपुर से मैट्रिक की कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात ये क्वीन्स कालेज बनारस के छात्र हुए तथा बाद में इन्होंने इलाहाबाद म्योर इण्टर कालेज से एफ0 ए0 की परीक्षा पास की। इसके पश्चात अपने बड़े भाई हकीम (नाबिना) के पास हैदराबाद चले गए। हैदराबाद उसमानिया कालेज से बी0एस0सी0 की परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर तथा उसी कालेज की छात्रवृत्ति से विलायत चले गये। सन् 1909 में एडिन वर्ग विश्वविद्यालय से डाक्टर की डिग्री प्राप्त करने के उपरान्त इन्होंने

असि0 प्रो0 इतिहास विभाग पी0जी0 कालेज, गाजीपुर ।

एल0आर0सी0पी0, एम0आर0सी0एस0 तथा एम0डी0, एम0एस0 मेडिकल की परीक्षा में प्रथम श्रेणी प्राप्त की।

डॉ0 अन्सारी पहले भारतीय थे जिन्हें विदेशों में महत्वपूर्ण उपलब्धि हुई। इसके पश्चात ही उन्हें लंदन के चारिंग क्रास चिकित्सालय में हाउस सर्जन, लॉक अस्पताल में रेजीडेण्ट मेडिकल अफसर तथा सैट पीटर्स चिकित्सालय में चिकित्सा सहायक पदों पर नियुक्त किया गया।

डॉ0 अन्सारी ने चारिंग क्रास चिकित्सालय में सुप्रसिद्ध ख्याति प्राप्त डॉ0 स्टीनले बोरड़ के साथ बड़े–बड़े पेंचीदा, नाजुक, खतरनाक आपरेशन को सफल बनाया। इनके निर्देश में रहने के कारण लन्दन के सुप्रसिद्ध सर्जनों में इनका एक विशिष्ट स्थान बन गया। इनकी स्मृति में वहाँ आज भी चारिंग क्रास चिकित्सालय में डॉ0 मुख्तार अहमद अन्सारी के नाम से वार्ड चलाया जा रहा है।

अंग्रेजों से डॉ0 अन्सारी की ये महान उपलब्धियाँ देखी न जा सकीं और इनके विरुद्ध चर्चाऍं आरम्भ कर दी गई। यहाँ तक कि ब्रिटेन के एक समाचार पत्र में डॉ0 अन्सारी की इन पदों पर नियुक्ति को ब्रिटेन के डाक्टर्स के साथ अन्याय लिखा है। मगर कुछ अधिकार पसन्द अंग्रेजों ने इसका खण्डन किया है। .....वे दिन हमारे चिकित्सालयों के लिए दुर्भाग्यशाली होंगे जब डाक्टर्स का चुनाव बुद्धि के बजाय नस्लों या कौम के आधार पर किया जायेगा। हमें कुशाग्र बुद्धि डॉक्टर्स की आवश्यकता है चाहे उसकी नस्ल एक गुलाम भारतीय की ही क्यों न हो। इससे आभास होता है कि डॉ0 अन्सारी में कितनी तीव्र बुद्धि रही होगी।

सन 1910 में इंग्लैण्ड से वापसी पर 'लाहौर मेडिकल कालेज' के अध्यक्ष पद को सुशोभित करने के लिए आपको आमंत्रित किया गया लेकिन जनसेवा और राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए उद्विग्न भावना के कारण आपने उक्त पद अस्वीकार कर दिया। वस्तुतः उस युग के आप प्रथम भारतीय चिकित्सक थे जिन्हें अंग्रेज शासकों ने इतने उच्च पद के लिए आमंत्रित किया था परन्तु अंग्रेजी सत्ता की छत्र छाया से विरक्ति की भावना से उद्वेलित हो आपने उक्त पद अस्वीकार कर दिया। वहाँ 6 माह रहने के पश्चात आपको न्याय विभाग में मुन्सिफ का पद प्रदान किया गया। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि रियासतों में विज्ञ पुरुषों की किस प्रकार की उपेक्षा की जाती थी। भारत का दौरा करते हुए कुछ दिनो के लिए ये अपने गॉव यूसुफपुर चले गये। कुछ समय अपने जन्म स्थान पर बिताकर फिर दिल्ली चले गये जहाँ आप जीवनपर्यन्त रहे।

आपको राष्ट्रीय भावना से ही इंग्लैण्ड में शिक्षा–अर्जन का गहरा लगाव हुआ। यूरोप में अपने निवासकाल में आप हिस्दुस्तानी मेडिकल एसोशियेशन के अध्यक्ष रह चुके थे। स्वदेश वापसी पर 1912 में बलकान युद्ध में 'भारतीय मेडिकल

मिशन' का नेतृत्व करने आप टर्की चले गये। वहाँ आपके मिशन को युद्ध स्थल में चिकित्सकीय सहायता द्वारा आश्चर्यजनक सफलताएँ तथा आशातीत विश्व ख्याति मिली थी। टर्की के भूतपूर्व सुल्तान ने उनकी चिकित्सकीय सहायताओं के आभार स्वरूप राष्ट्र के सर्वोच्च पदक से उन्हें विभूषित किया जो आज भी अन्सारी इण्टर कालेज मुहम्मदाबाद में धरोहर के रूप में सुरक्षित है। स्वर्गीय मौलाना मुहम्मद अली के प्रसिद्ध अंग्रेजी साप्ताहिक 'कामरेड' में डॉ0 अन्सारी की अपील ने भारतीयों में एक नई क्रियात्मक भावना जागृत कर दी।

डॉ0 मुख्तार अहमद अन्सारी भारत में अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलन के संस्थापक थे। इन्हीं के निमंत्रण पर ही तत्कालीन तुर्की मंत्री रऊफ बेग तथा शिक्षा मंत्री खालिदा अदीब खानम भारत आये और मुख्य अतिथि के रूप में इन लोगों ने 'जामयामिलिया इस्लामिया' देहली में तुर्की क्रांति तथा नव–निर्माणाधीन तुर्की पर अपने व्याख्यान दिये।

1919 में अंग्रेज विरोधी गतिविधियों ने डॉ0 अन्सारी को कांग्रेस में सम्मिलित होने को बाध्य किया। राष्ट्र सेवा की भावना से आन्दोलित होकर ये भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सक्रिय नेता बन बैठे। अल्प समय में ही राष्ट्र के प्रथम पंक्ति के नेताओं में आपका नाम आने लगा। महात्मा गॉधी, पंडित मोतीलाल नेहरू, श्री सी0आर0 दास, श्रीमती सरोजनी नायडू ,डॉ0 विधानचन्द्र राय, हकीम अजमल खाँ, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, अली बन्धु, सरदार वल्लभ भाई पटेल, रवीन्द्रनाथ टैगोर, मिस्टर मजरूल हक आदि नेताओं से शीघ्र ही इनके घनिष्ठ सम्बन्ध हो गये और आप दिल्ली प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। अध्यक्ष पद प्राप्त करते ही आपने अपने अध्क्षीय भाषण में 'साइमन कमीशन' का घोर विरोध किया। आप सविनय अवज्ञा आन्दोलन के सदस्य और असहयोग आन्दोलन के समर्थक रहे।

02 जून 1920 को इलाहाबाद में सभी राजनीतिक दलों का संयुक्त अधिवेशन हुआ। जिसमें कार्यक्रम तैयार करने के लिए गॉधीजी और प्रमुख मुस्लिम नेताओं की कमेटी बनी। गाजीपुर का खिलाफत आन्दोलन से गहरा सम्बन्ध था। गाजीपुर के निवासी डॉ0 अन्सारी की अध्यक्षता में एक विशिष्ट मण्डल वायसराय से मिला और उनसे माँग की कि तुर्की साम्राज्य को अविभाजित रखा जाय तथा खलीफा को ही सुल्तान रहने दिया जाय।

10 दिसम्बर 1920 को गाजीपुर के गोराबाजार में एक जनसभा को सम्बोधित करते हुए डॉ0 अन्सारी ने कहा कि पंजाब पंजाब की अमानुषिक घटनाओं से सम्पूर्ण भारत आहत है। हमारा विश्वास अंग्रेज सरकार से उठ गया है। हमारे देश के महानतम नेता महात्मा गॉधी और शौकत अली ने जनता के सामने

एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया है। यह कार्यक्रम असहयोग का है। महात्मा गॉधी का कथन है कि हम दुनिया के सामने यह सिद्ध कर देगें कि भारतीय सभ्यता तथा भारतीय आत्मा पश्चिम के तथा कथित सभ्य देशों की तुलना में महान है। इजिप्ट ने सहयोग के रास्ते स्वतंत्रता प्राप्त की है। यदि भारत के सभी वर्गों के लोग उत्साह के साथ सहयोग कार्यक्रम को स्वीकार कर लें तो हमारे लिये स्वतंत्रता प्राप्त करना असम्भव नहीं है। देश में इस समय तीन महान संस्थाऍ हैं– खिलाफत कमेटी, मुस्लिम लीग तथा कांग्रेस। इनके बीच कोई मतभेद नहीं है। सम्पूर्ण हिन्दुस्तान संगठित है। गाजीपुर के लोग भी इस महान आन्दोलन के लिए संगठित हो जायें। मैं अक्टूबर महीने में जनपदीय कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेने आऊँगा। उस समय देखूंगा कि आप लोगों ने कार्यक्रम को किस सीमा तक स्वीकार किया है। मैं कार्यक्रम का पूर्ण विवरण आपके सामने नहीं रखना चाहता, क्योंकि आप सभी इससे पूर्व परिचित हैं। मेरे मित्रों! स्वदेशी को ही लें। आप जानते हैं कि अकेले कपड़े से करोड़ों रूपये भारत से विदेशों में जाते हैं। जिसमें 85 प्रतिशत धन अकेले ब्रिटेन में जाता है। अंग्रेजों पर सबसे प्रभावी आक्रमण होगा कि उनकी जेबों को खाली कर दें। जब उनकी जेब खाली हो जायेगी तभी अन्य कार्यक्रम सफल हो पायेंगे।

अंग्रेजी शिक्षा हमारे बच्चों को नष्ट कर रही है। उन्हें मानसिक रूप से गुलाम बना रही है। इसलिए अपने बच्चों को राष्ट्रीय विद्यालयों में भेजिए जिससे उनमें ऊँचे विचारों तथा देशभक्ति की भावना का विकास हो। न्याय के सम्बन्ध में यदि आप पंचायतों के माध्यम से निर्णय करने लगेगें तो अंग्रेजी अदालतें खाली हो जायेंगी। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यदि अदालतें खाली हो जायें तो दुनिया में कोई भी सरकार एक दिन नहीं टिक पायेगी।

जो कार्य आपके सम्मुख हैं वे अत्यन्त कठिन हैं तथा उनके लिए अनेक बलिदानों की आवश्यकता है। जो असहयोग में भाग लेने के लिए सामने आयेगा, उसे पुलिस उत्पीड़न का सामना करना पड़ेगा। मैं आज भाषण कर रहा हूँ कल जेल में हो सकता हूँ किन्तु देश की स्वतंत्रता के लिए मैं जेल जाने को तैयार हूँ। कोई भी देश बिना आत्मोत्सर्ग के स्वतंत्रता प्राप्त नहीं कर सकता।

1927 में अखिल भारतीय कांग्रेस का 43वाँ अधिवेशन मद्रास में हुआ जिसके अध्यक्ष पद से डॉ0 मुख्तार अहमद अन्सारी ने हिन्दू–मुस्लिम एकता को महत्वपूर्ण बताते हुए कार्यकर्त्ताओं को एकजुट होकर कार्य करने को उत्साहित किया।

हिन्दू–मुस्लिम एकता के सम्बन्ध को सुधारने के प्रयास में हमें एक दूसरे को अलग समझने की गलती नहीं करनी चाहिए। दोनों वर्गों को राजनैतिक, धार्मिक मतभेदों को समाप्त करना अति आवश्यक है। उनका सुझाव था कि हमें एक ऐसा रचनात्मक कार्यक्रम रखना चाहिए जिसके द्वारा हिन्दू और मुसलमानों को

एक साथ मिलकर बैठने का अवसर प्रदान हो। भारतीय जनता को सभी मतभेदों को भुलाकर कदम से कदम मिलाकर साथ चलने का संकल्प लेना चाहिए तभी आजादी सम्भव है।

यह कांग्रेस का प्रथम कदम था, जब पूर्णतया खुलकर आजादी 'रिजोल्यूशन' पास किया गया। इसको सफल बनाने के लिए देश के हर वर्ग के लोग भारत माता को स्वतंत्र कराने के उद्देश्य से अपने प्राणों की आहुति देने के लिए उत्तेजित होकर स्वतंत्रता संघर्ष में सक्रिय हुए।

नेदरसोल के विरुद्ध संघर्ष का आरम्भ दाण्डी यात्रा से मार्च 1930 में हुआ। अपने 78 सदस्यों के साथ महात्मा गॉधी साबरमती आश्रम से रवाना हुए और 200 मील पैदल यात्रा करके समुद्र तट पर दाण्डी पहुॅचकर नमक बनाकर नमक कानून को तोड़ा। जैसे ही सोल के विरुद्ध संघर्ष में गति उत्पन्न हुई.....गांधीजी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, डॉ0 मुख्तार अहमद अन्सारी को गिरफ्तार कर लिया गया। जनवरी 1931 में ये लोग रिहा हो गए।

डॉ0 अन्सारी के निवास 'दारूसलाम' में ही कांग्रेस में महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत हुआ करते थे। महात्मा गॉधी की उपस्थिति में 1931 में सरकार तथा कांग्रेस की वार्ता के उपरान्त 'गांधी इरविन पैक्ट' भी यहीं सम्पन्न हुआ। इस समझौते का खाका तैयार करने में डॉ0 अन्सारी का प्रयास सराहनीय रहा। आपके अथक प्रयासों के कारण ही कांग्रेस तथा सरकार में सम्मानपूर्ण समझौता हो सका था। जिसके फलस्वरूप प्रथम चरण के रूप में राजनीतिक बन्दियों की रिहाई का सरकार ने आदेश दिया।

डॉ0 अन्सारी को स्वतंत्र राष्ट्रीय शिक्षा से अत्यधिक प्रेम था। आपने अपने अन्य साथियों की सहायता से राष्ट्रीय विश्वविद्यालय 'जामिया मिलिया' की स्थापना की। कई छात्रों को अपने व्यक्तिगत व्यय से ब्रिटेन और फ्रांस में शिक्षा दिलाई जिसमें श्री अब्दुल रहमान सिद्दीकी, शुएब कुरैशी मुख्य हैं। तथा अपनी जन्मभूमि के निकटम गाँव शेरपुर के एक ब्राह्मण युवक का नाम उल्लेखनीय है जिसे अपने 'तिब्बिया कालेज' दिल्ली में पॉच वर्ष तक चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा दिलायी। राजनीतिक क्षेत्र के अतिरिक्त शिक्षा के क्षेत्र में भी वे धर्मनिरपेक्षता की भावना से कार्य करते थे तथा नवयुवकों को प्रेरणा प्रदान करते थे। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की शैक्षणिक और प्रशासनिक संकीर्ण धर्म प्रवण व्यवस्था से असंतुष्ट होने पर गांधीजी ने डॉ0 अन्सारी, पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा डॉ0 शिवप्रसाद गुप्त को धर्मनिरपेक्ष तथा राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत हो विश्वविद्यालय की स्थापना का गुरुतर भार सौंपा, जिसके परिणामस्वरूप 'जामिया मिलिया' अलीगढ़, काशी विद्यापीठ की नींव पड़ी।

डॉ0 अन्सारी में मानव प्रेम तथा निर्धनों के प्रति गहरी सहानुभूति की भावना चरम सीमा तक थी। इसलिए अपने चिकित्सालय के प्रत्येक शुक्रवार को निःशुल्क सेवा प्रदान किया करते थे। कहा जाता है कि मृत्यु के समय इस राष्ट्र प्रसिद्ध चिकित्सक के पास कोई धनराशि न थी। आपने वामपंथी आन्दोलन को सहयोग दिया। कम्यूनिस्टों के विरोध में जब मेरठ षडयंत्र का अभियोग चला तो पं0 मोतीलाल, पं0 जवाहर लाल नेहरू और डॉ0 अन्सारी बचाव समिति के सदस्य थे। आर्थिक सहायता के अतिरिक्त आपने अपनी मोटरकार भी इस समिति प्रयोग हेतु सौंप दिया था। सक्रिय असहयोग के द्वितीय संघर्ष में भी डॉ0 अन्सारी जेल में बन्द कर दिये गये। इस बार जेल घातक सिद्ध हुआ और वह ह्रदय रोग से पीड़ित हो गए। मुक्त होने पर इंग्लैण्ड गये किन्तु शारीरिक अस्वस्थता दूर न हो सकी।

प्राण निकलने के समय भी उनके मुख से भारत के प्रति कुछ शब्द निकले –

''भारत के खिजमत की तमन्ना अभी मेरे दिल में बाकी है। कुछ दिनों और जीवित रहकर काश अपने प्रयासों का नतीजा देखना नसीब होता। काश, हिन्दुस्तान आजाद हो जाता। भारत का यह अनमोल रत्न डॉ0 मुख्तार अहमद अन्सारी इन्हीं शब्दों के साथ 10मई 1936 को मसूरी से आते समय ट्रेन में खुदा को प्यारे हो गए। इन्हें जामिया के अहाते मे दफन कर दिया गया।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. 'कांग्रेस वर्णिका : भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 100 वर्ष, 1885–1885 वर्ष 1 अंक 3 दिसम्बर 1885 अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (ई) 24 अबार रोड, नई दिल्ली।
2. उत्तर प्रदेश राजकीय अभिलेखागार लखनऊ जी0ए0डी0 फाइल सं0 235 (1910) ।
3. 'आजकल' उर्दू पत्रिका 1985 परिया हाउस नई दिल्ली डॉ0 मोख्तार अहमद अन्सारी तम्बर 1985 ।
4. शम्मये आजादी के प्रवाने दीनिया एकडमी मदरसा दीनिया, गाजीपुर।
5. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में पूर्वी उ0प्र0 का योगदान (डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद)
6. स्वतंत्रता आन्दोलन और उसके बाद (कमलापति त्रिपाठी)
7. टाइम्स आफ इण्डिया – 05 सितम्बर 1980 ।
8. मोख्तार अहमद अन्सारी मशीरूल हसन, फस्ट पब्लिकेशन सितम्बर 1997। पब्लिकेशन डिविजन 01 एस0बी0एन0 81–233687 ।पिरिन्टेड रूट जूपिट अफसेट शाहदरा, दिल्ली।